बहुजन ज्ञान संवाद

बहुजन समाज रीसर्च प्रोग्राम
विद्या आश्रम
12 अक्तूबर, 2023, मोहाली, चंडीगढ़

सुनील सहस्रबुद्धे (13 अक्तूबर 2023)

उपरोक्त विषय पर बात करने के लिए 10 अक्तूबर को सुनील कश्यप दिल्ली से मोहाली आये थे. सुनील कश्यप बागपत (पश्चिम उत्तर प्रदेश) के रहने वाले हैं. उन्होंने 2007 से 2012 के बीच बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.ए. और एम.ए. (राजनीति शास्त्र) किया. फिर 2018 तक वहीं रह कर छात्रों के बीच भगतसिंह मोर्चा का गठन किया. वामपंथी साथियों से मतभेद के चलते फिर उन्होंने समता परिवार नाम से बहुजन समाज के नौजवानों का एक संगठन बनाया. इसके बाद *Caravan* पत्रिका के हिंदी ऑनलाइन प्रकाशन (कारवाँ) में काम किया. विद्या आश्रम के एक दो कार्यक्रमों में शामिल भी हुए हैं. अभी दिल्ली में मुनीरका में रहकर पिछड़ी जातियों के बीच अध्ययन और संगठन का काम कर रहे हैं.

मोहाली में 10 अक्तूबर को सुनील सहस्रबुद्धे और चित्राजी की सुनील कश्यप से लम्बी बात हुई. फिर 11अक्तूबर को इस संवाद में संदीपा, वैभव और नीरजा शामिल हुए. बातचीत के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं.

पृष्ठभूमि और प्रासंगिकता:

1. बहुजन समाज सामान्य लोगों का समाज है (विशिष्ट जनों का नहीं). इसे अलग-अलग ढंग से जातियों के मार्फ़त, समाज के रूप में, बिरादरियों के मार्फ़त, मुख्यधारा से बहिष्कृत लोगों के रूप में, अंग्रेजी राज के पहले से अस्तित्व रखने वाली सामाजिक संरचनाओं के रूप में अथवा सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर पिछड़ों के रूप में पहचाना जाता है. कौन सी पहचान को प्राथमिकता दी जाए अथवा पहचान का वरीयता क्रम क्या हो यह इससे तय होता है कि आप के उद्देश्य क्या हैं,और यह भी कि समाज निर्माण, परिवर्तन और प्रगति के आप के विचार क्या हैं?
2. बहुजन समाज की सार्वजनिक उपस्थिति, राजनीतिक भूमिका और एक समाज के रूप में गोलबंदी आज एक नए मोड़ पर दिखाई देती है. जन गणना में जाति की पहचान लिखी जाने के अभियान के रूप में यह दिखाई दे रहा है. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सभ्यता, संस्कृति और नस्ल के मुद्दे बहस में आ चुके हैं. इसलिए अब बराबर के सम्मान और आय के पक्ष में परिवर्तन की राजनीति की दिशा का पुनर्निर्माण आवश्यक है.

प्रस्ताव:

1. यह देश और यहाँ का धर्म बहुजन समाज का है. संत परम्परा बहुजन समाज के विचारों की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है और इसने हिन्दू धर्म को लोक-भागीदारी की बुनियाद पर खड़ा किया. अब हिंदुत्व के नाम से एक नया धर्म इन पर थोपा जा रहा है. अलग-अलग समयों पर ब्राह्मणों, मुगलों और अंग्रेजों ने इन पर राज करने की व्यवस्थाएं बनाईं तथापि इतिहास के अधिकांश काल में बहुजन समाजों के ही राजाओं का

राज रहा है. इसका अर्थ यही है कि बहुजन समाज के पास जीवन संगठन, राज और समाज-सञ्चालन का दर्शन रहा है, जिसने हमारी सभ्यता और संस्कृति के कीर्तिमान गढ़े हैं.

आज बहुजन समाज राजनीतिक दृष्टि से एक दो-राहे पर खड़ा है. या तो वह समाज में बड़े संरचनागत परिवर्तन की ओर आगे बढ़ने का रास्ता चुने या फिर वर्तमान व्यवस्था में अपने लिए अधिक से अधिक जगह प्राप्त करने के रास्ते बनाये. ये दोनों बातें अलग तो हैं किन्तु एक दूसरे से जुड़ी हुई भी हैं तथा समाज से सरोकार रखने वालों के बीच लम्बे समय से बहस का विषय रही हैं और रहेंगी.

2. बहुजन समाज अपना रास्ता अपने दृष्टिकोण, दर्शन और हितों के जरिये चुने इसके लिए यह आवश्यक प्रतीत होता हैं कि बड़े पैमाने पर इस विषय पर सार्वजनिक बहस हो. यह बहस आज के प्रभु वर्गों के विचारों से स्वतंत्र होना ज़रूरी है और इसलिए बहुजन समाज के दर्शन, इतिहास, राजनीति, और संभावी भविष्य को लेकर विस्तृत शोध व अनुसंधान की ज़रूरत है. यह अनुसंधान विश्वविद्यालय के अनुसंधान से सर्वथा अलग होगा क्योंकि विश्वविद्यालय के अनुसंधान पर पश्चिम की आधुनिक दार्शनिक परम्पराओं और ब्राह्मणों के विचारों का आधिपत्य है और उसमें बहुजन समाज के दर्शन और उनके दर्द के लिए कोई स्थान नहीं है.
3. इस अनुसंधान का घर किसानों और कारीगरों के बीच होगा, रोज़ की कमाई करने वाले ठेले-गुमटी-पटरी वालों तथा मजदूरों के बीच होगा, बड़े पैमाने पर स्त्रियों के विचारों, कार्यों, अनुभवों में होगा, एक शब्द में कहें तो उनके जीवन में होगा. देश की मुख्यधारा से सबसे ज्यादा कटे हुए आदिवासी समाज के लोग हैं और इस अनुसन्धान में उनके जीवन और तौर-तरीकों का बड़ा स्थान होगा.
4. यह अनुसंधान मोटे तौर पर बहुजन ज्ञान संवाद होगा, जिसकी एक मूल मान्यता यह होगी कि बहुजन समाज एक ज्ञानी समाज है. तथा यह अनुसंधान उसके ज्ञान को नए समकालीन रूपों में प्रस्तुत करेगा.
5. बहुजन समाज के व्यावहारिक ज्ञान, वस्तुओं को बनाने के शिल्प और कला से तो सब परिचित हैं तथापि इन दक्षताओं की पृष्ठभूमि में इनका अपना दर्शन होता है. यह संवाद इस दर्शन को सार्वजनिक पटल पर प्रस्तुत करने के रास्ते बनाएगा.

दो दिन उपरोक्त बिन्दुओं पर चर्चा हुई. कारीगर समाजों में जो छोटी जाति के माने जाने वाले लोग हैं उनकी क्षमताओं, सामाजिक परिस्थिति और दर्शन की हैसियत पर काफी बात हुई. जाहिर है सभी बातों पर सब सहमत नहीं थे और यह तय किया गया कि विद्या आश्रम सारनाथ पर 15से 20 दिसंबर के बीच इस बात चीत को आगे बढ़ने के लिए एक बैठक बुलाई जाये. इस बैठक को सुनील कश्यप आमंत्रित करेंगे. इस बैठक की कार्यवाही को एक ऐसे ब्यौरे के रूप में लिखा जायेगा जो और लोगों को पढने के लिए दिया जा सके, कह सकते हैं कि प्रकाशित किया जायेगा.